मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 6

# MSK–008

## स्नातकोत्तर कला उपाधि कार्यक्रम (संस्कृत)

## (एम. एस. के.)

## सत्रांत परीक्षा

## जून, 2026

## एम.एस.के.-008 : संस्कृत साहित्यः

## गद्य, पद्य एवं नाटक

*समय : 3 घण्टे* *अधिकतम अंक : 100*

---

***नोट :*** *(i) इस प्रश्न-पत्र में तीन खण्ड हैं।*

*(ii) सभी खण्ड करना अनिवार्य है।*

*(iii) खण्डों में दिए गए निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर लिखिए।*

---

**खण्ड—1** $3\times10=30$

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :

(क) जानन्ति हि गुणान् वक्तुं तद्विधा एव तादृशाम्।

वेत्ति विश्वम्भरा भरां गिरीणां गरिमाश्रयम्॥

(ख) अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी त्रयीव नीतांग गुणेन विस्तरम्।

अगाहताष्टादशतां जिगीषया नवद्वयदीप पृथग्जयश्रियाम्॥

(ग) एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्

भिन्न पृथक्पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।

आवर्तबुद्बुद्तरङ्गमयान्विकारा

नम्भो यथा, सलिलमेव हि तन्समस्तम्॥

(घ) अप्रतिष्ठे कुलज्येष्ठे, का प्रतिष्ठा कुलस्य नः ?

इति दुःखेन तप्यन्ते, त्रयो नः पितरोऽपरे॥

(ङ) जननीतिमुदितमनसा सततं सुस्वाभिना कृतानन्दा।

सा नगरी नगतनया गौरीव मनोहरा भाति॥

**खण्ड—2** $4\times10=40$

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) महाकवि भवभूमि की भाषाशैली पर प्रकाश डालिए।

(ख) संस्कृत साहित्य में 'चम्पू' विधा पर प्रकाश डालते हुए नलचम्पू के वैशिष्ट्य को लिखिए।

(ग) त्रिविक्रमभट्ट के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डालिए।

(घ) कादम्बरी (महाश्वेता वृत्तान्त) का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

(ङ) 'उत्तररामचरितम्' के वैशिष्ट्य को चित्रित कीजिए।

(च) 'नैषधीयचरितम्' में वर्णित हंस की विशेषताओं को लिखिए।

**खण्ड—3** $2\times15=30$

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** गद्यांशों की व्याख्या कीजिए—

(क) प्रभातचन्द्रमिव पाण्डुतया परिग्रहीतम् निदाघगङ्गाप्रवाहमिव क्रशिमानमागतम्, अन्तर्गतानलं चन्दनविटपमिव म्लायन्तम् अन्यमिवा दृष्टपूर्वभिवापरिचितमिव ग्रहगृहीतमिवोन्मत्तमिव छलितमिवान्धमिव बधिरमिव मूकमिव विलासमयमिव, मदनमयमिव परायत्ताचितवृत्ति परां कोटिमधिरूढं मन्मथावेशस्यानभिरोयपूर्वाकारं तमहमद्राक्षम्।

(ख) अथ गीतावसाने भूकीभूतवीणा प्रशान्तमधुकर रुतेव कुमुदिनी सा कन्यका समुत्थाय प्रदक्षिणीकृत्य कृतहरप्रणामा परिवृत्य स्वभाव धवलया तपः प्रभाव प्रगल्भया दृष्ट्या समाश्वासयन्तीव, पुण्यैरिव स्पृशन्ती तीर्थ जलैरिव प्रक्षालयन्ती, तपोभिरिव पावयन्ती, शुद्धिमिव कुर्वाणा, वरदानम् इवोपपादयन्ती पवित्र तामिव नयन्ती, चन्द्रापीडमावभाषे स्वागतमतिथये, कथमिमां भूमिमनुप्राप्तो महाभागः, तदुत्तिष्ठ, आगम्यताम्, अनुभूयतामतिथिसत्कारः इति।

(ग) ततोऽवतीर्य तरुशाखायां बद्ध्वा तुरङ्गम् उपसृत्य भगवते भक्त्या प्रणम्य त्रिलोचनाय, तामेव

दिव्ययाषितमेशपक्ष्मणां निश्चलानिबद्धलक्ष्येण चक्षुषा पुनर्निरूपयामास। उदपादि चास्य तस्या रूपसम्पदा कान्त्या प्रशान्त्या चाविर्भूतविस्मस्य मनसि अहो! जगति जन्तूनामसमर्थितोपनतान्या पतन्ति वृत्तान्तराणि।

× × × × ×